संवाद के माध्यम से ख़ुशहाली तक पहुँचना

नूपुर रस्तोगी

शिक्षक बच्चों के लिए कक्षा में सीखने के अनुभव को रचनात्मक और सकारात्मक बनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करते हैं। वे यह सुनिश्चित करने की कोशिश करते हैं कि टकराव न हो। जिसका अर्थ है कि ऐसा माहौल बनाए रखना जहाँ बच्चे किसी भी ऐसी बातचीत में शामिल न हों जो सम्भावित रूप से टकराव का कारण बन सकती है। इसमें असहज मुद्दों पर चर्चा करने से बचने के बारे में साझा समझ बनाना शामिल है। यह झुकाव प्राथमिक कक्षाओं में शुरू होता है और माध्यमिक शिक्षा पर पहुँचने तक उनके व्यवहार और विचारों में परिलक्षित होता है।

समय-समय पर, विद्वानों ने उत्पीड़ित समुदायों के बच्चों के दैनिक जीवन के अनुभवों से जुड़ी उलझनों को व्यक्त करने की गुंजाइश पर चिन्ता व्यक्त की है। ये अनुभव ऐसे पूर्वाग्रहों, रूढ़ियों, वर्जनाओं और भेदभावों में निहित होते हैं जो यह बच्चे या इनके परिवार और समुदाय के सदस्य रोज़ अनुभव करते हैं। इस लेख में सबसे पहले, बच्चों के लिए कक्षा के भीतर समस्याग्रस्त और परस्पर विरोधी मुद्दों पर बात करने के लिए स्थान बनाने की आवश्यकता पर और फिर ऐसे स्थानों को सुगम बनाने में शिक्षकों की भूमिका पर चर्चा की गई है। साथ ही ऐसे स्थानों की गतिशीलता के बारे में कुछ सुझाव दिए गए हैं।

सुरक्षित स्थान बनाना

कक्षा के भीतर अपनी ख़ुशहाली को सुनिश्चित करने के लिए विद्यार्थियों को डर, धमकी और असुविधा के बिना ख़ुद को अभिव्यक्त करने में सुरक्षित और सहज महसूस करना बहुत ज़रूरी है। कक्षा में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी होते हैं। एक सुरक्षित स्थान बनाने में, एक शिक्षक यह सुनिश्चित करती है कि ये सभी बच्चे एक-दूसरे से सम्मानपूर्वक बात करें; कोई भी बच्चा ऐसे अपमानजनक शब्दों का उपयोग नहीं करता जो उसने अपने घरों या समुदायों में सुने हों। कोई भेदभाव नहीं होता है और बच्चे अपनी शिकायतें बिना किसी डर के सहजता से व्यक्त करते हैं।

कक्षा में कुछ बच्चे भले ही स्कूल में इस तरह के लांछनों का अनुभव न करें, पर वे इसे समुदाय में अनुभव कर सकते हैं। इसी तरह, कुछ बच्चे कक्षा में अपमानजनक शब्दों का प्रयोग नहीं करते लेकिन अपने माता-पिता को घर पर किसी विशेष समुदाय/ समुदायों के लिए उनका उपयोग करते हुए सुनते हैं। ऐसे मामलों में, सुरक्षित स्थान बनाना पर्याप्त नहीं लगता। इन वर्जित मुद्दों को खुले में लाने के लिए क्या करने की ज़रूरत है, जो कुछ बच्चों में असहजता और टकराव पैदा करते हैं?

साहसपूर्ण स्थान : अगला चरण

यदि एक 'सुरक्षित स्थान' एक नियमित कक्षा का दर्शन है, तो एक 'साहसपूर्ण स्थान' ऐसा क्षेत्र है जिसे एक शिक्षक विद्यार्थियों के साथ उनके लिए नियमित अन्तराल पर बनाती है, जहाँ वे अपने दैनिक जीवन के अनुभवों के बारे में बात कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक कक्षा एक 'सुरक्षित' स्थान होना चाहिए जहाँ विद्यार्थी अपने मतभेदों के बावजूद ख़ुद को सम्मिलित महसूस करें। इससे एक ऐसा माहौल बनता है जहाँ विद्यार्थी ग़लतियाँ कर सकते हैं और ख़ुद के बारे में दूसरों द्वारा राय बनाए जाने के भय से मुक्त होकर उन ग़लतियों से सीख सकते हैं। यह माहौल भय से रहित और सहयोग से भरा है। परस्पर विरोधी मुद्दों के बारे में बात करने के लिए, कम-से-कम शुरुआत में, यही कक्षा समय-समय पर 'साहसपूर्ण' स्थान बना सकती है। उदाहरण के लिए, एक साहसपूर्ण स्थान विद्यार्थियों को उन पर लगाए गए किसी जातिवादी लांछन, किसी धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय का होने के अनुभव से सम्बन्धित भेदभाव और उनके माता-पिता का एक निश्चित पेशा होने की वज़ह से होने वाले अपमान के बारे में बात करने में सक्षम बनाता है। यह विद्यार्थियों के लिए इन मुद्दों के साथ संवाद में शामिल होने और उनके बारे में बात करना सीखने का स्थान भी बन जाता है। यह उन पूर्वाग्रहों और रूढ़ियों को दूर करता है जो वे समाज के हिस्से के रूप में अन्य संस्कृतियों या समूहों के लिए रखते हैं।

बच्चे क्या और कितना साझा करना चाहते हैं, इसका विकल्प उन्हीं पर होता है। यह पहल हाशिए पर रहने वाले समुदायों के बच्चों को दूसरों के साथ अपने अनुभवों को पहचानने, आवाज़ उठाने और इन पर विचार करने में मदद करती है।

मैं एक उदाहरण से स्पष्ट करती हूँ कि प्राथमिक कक्षाओं में भी जटिल मुद्दे बच्चों को कैसे परेशान करते हैं। 2015 में, मैं कक्षा-4 को पढ़ा रही थी और यह क्रिसमस से तीन दिन पहले की बात थी। मैं अपने विद्यार्थियों को उन चिन्ताओं को व्यक्त करने का मौक़ा देना चाहती थी जो अन्यथा स्कूल

के प्रोटोकॉल के अनुसार निषिद्ध थीं। इसलिए, मैंने अपनी कक्षा के बच्चों को सुझाव दिया कि हम सान्ता क्लॉज़ को पत्र लिखें। यह जानते हुए कि सान्ता उपहार देता है, क्यों न दो ऐसी बातें लिखें जो हमें सबसे ज़्यादा ख़ुश करती हैं और दो ऐसी बातें जो हमें अन्दर तक चिन्तित करती हैं। लेकिन हम अपने माता-पिता, शिक्षकों या किसी अन्य वयस्क को नहीं बता सकते?

ये पत्र मेरे विद्यार्थियों की गहरी चिन्ताओं को सामने लाए - परिवार में ग़रीबी, घरेलू हिंसा, स्कूल छोड़ना, छेड़छाड़ और दुर्व्यवहार, माता-पिता के विवाहेतर सम्बन्ध और घर में लैंगिक भेदभाव। उस दिन तक, मुझे कक्षा-4 के (दस वर्षीय) इन विद्यार्थियों के जीवन के इन पहलुओं के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। इसने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि मेरी कक्षा में क्या कमी थी जिसके कारण वे अपनी चिन्ताओं को किसी के साथ साझा नहीं कर सकते थे। क्या इससे उनकी समग्र ख़ुशहाली प्रभावित हुई? क्या वे इसके बारे में पढ़ते, सोते और भोजन करते समय सोचते थे? वे इससे कैसे निपट रहे थे?

यदि कोई इन मुद्दों पर स्कूल के भीतर चर्चा करना शुरू कर दे तो कक्षा कैसी दिखेगी? क्या मैं ऐसी किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार थी जो इस तरह की चर्चा से उत्पन्न हो सकती थी? इन मुद्दों के बारे में बात करने के लिए सावधानियाँ और पूर्व शर्तें क्या थीं? मैं अपना पाठ्यक्रम, परीक्षा की तैयारी और बाक़ी सब काम कब पूरा करूँगी? ये प्रश्न वर्तमान शैक्षिक प्रणाली की सीमाओं में निहित हैं और कक्षा के भीतर इन चुनौतियों से निपटने के तरीक़े खोजने की आवश्यकता है। साहसपूर्ण स्थान बनाना इनमें से एक हो सकता है।

आवधिक संवाद मण्डलियाँ (पीडीसी)

अन्य समाधानों में से एक हो सकता है आवधिक संवाद मण्डलियों (Periodic Dialogic Circles/ पीडीसी) का उपयोग करना जिनमें विद्यार्थी और शिक्षक एक साथ बैठते हैं और विद्यार्थियों से सम्बन्धित मामलों के बारे में बात करते

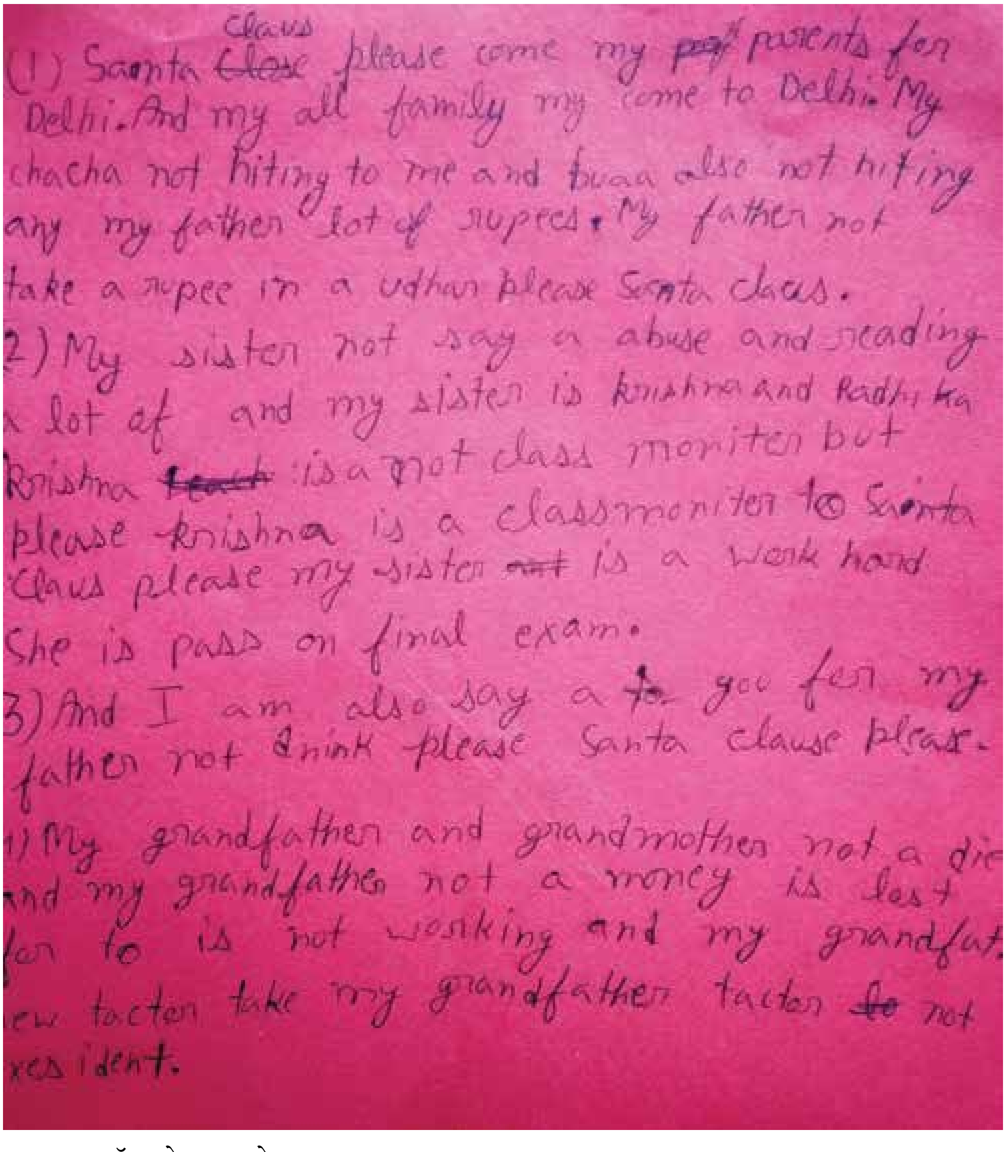

(1) Santa ~~Close~~ Claus please come my ~~pa~~ parents for Delhi. And my all family my come to Delhi. My chacha not hiting to me and buaa also not hiting any my father lot of rupees. My father not take a rupee in a udhar please Santa claus.
2) My sister not say a abuse and reading a lot of and my sister is krishna and Radhika Krishna ~~teach~~ is a not class moniter but please krishna is a classmoniter to Santa Claus please my sister ~~not~~ is a work hard She is pass on final exam.
3) And I am also say a ~~to~~ you for my father not drink please Santa clause please.
1) My grandfather and grandmother not a die and my grandfather not a money is lost for to is not working and my grandfat... new tacter take my grandfather tacter ~~to~~ not resident.

चित्र-1 क : सान्ता क्लॉज को एक बच्चे का पत्र।

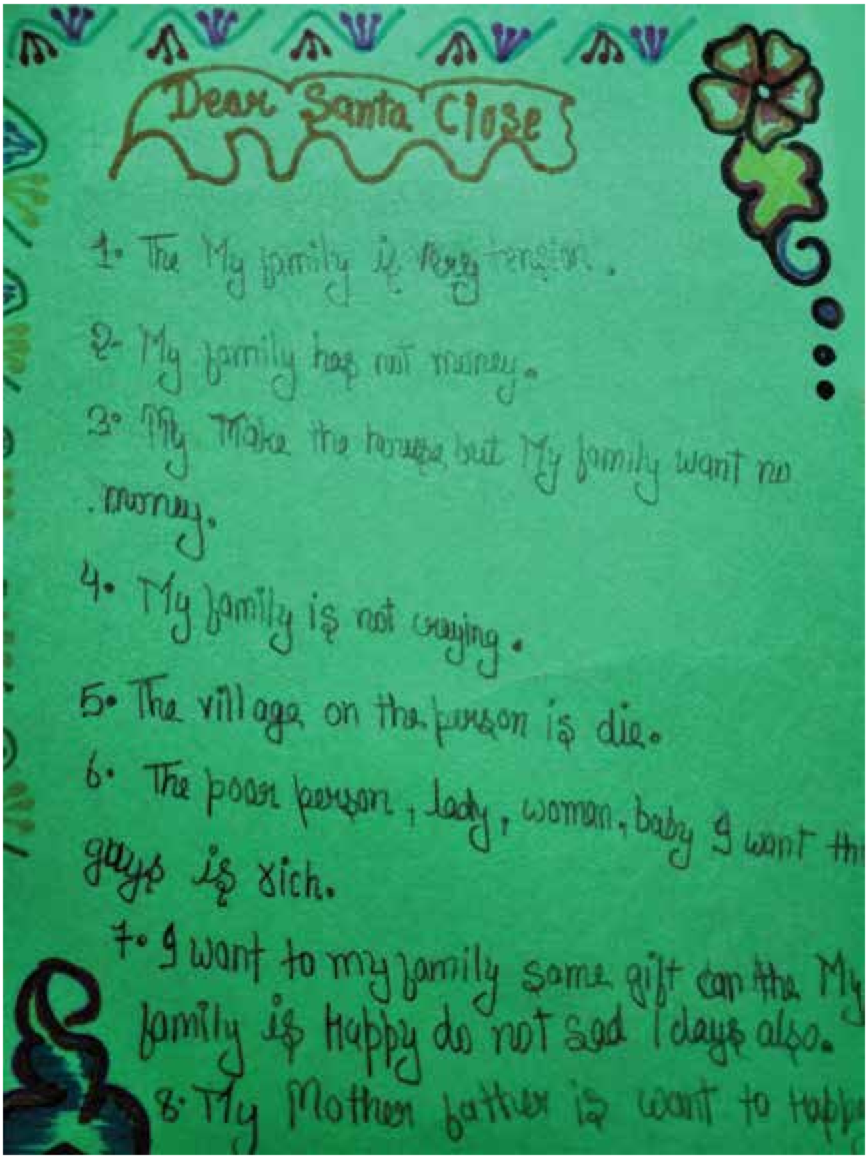
Dear Santa Close

1. The My family is very tension.
2. My family has not money.
3. My Make the house but My family want no money.
4. My family is not crying.
5. The village on the person is die.
6. The poor person, lady, women, baby I want th guys is rich.
7. I want to my family some gift can the My family is Happy do not sad 1 days also.
8. My Mother father is want to happ

चित्र-1 ख : सान्ता क्लॉज को एक अन्य बच्चे का पत्र।

हैं। इन सत्रों में विद्यार्थियों के ज्ञान के अधिकार को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है, इसलिए वे उन मुद्दों को चुनते हैं जो उनके लिए मायने रखते हैं। पीडीसी साहसपूर्ण स्थानों का सहयोग करने और अन्य लोगों/ समुदायों के ख़िलाफ़ पूर्वाग्रहों को कम करने में संवाद के महत्त्व पर प्रकाश डालते हैं। पीडीसी बनाने के लिए कुछ सावधानियाँ और पूर्व शर्तें निम्नलिखित हैं।

1. *पीडीसी में कोई लक्ष्य या एजेंडा नहीं होता*

   एजेंडा विचारों के मुक्त प्रवाह के लिए बाधाओं के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, 15 मिनट के लिए कहानियों को साझा करने का एजेंडा, उसके बाद चर्चा आदि; विद्यार्थियों के लिए यह यांत्रिक हो सकता है, जैसे कोई काम जिसे उन्हें एक घण्टे में ख़त्म करने की ज़रूरत है। यह उन विद्यार्थियों पर दबाव के रूप में भी काम कर सकता है जो सम्भवतः अपनी बात साझा करने और बोलने में सहज न हों। इसकी बजाय, विद्यार्थियों को उनके लिए मायने रखने वाली किसी भी चीज़ के बारे में बात करनी चाहिए। यह सम्भावना है कि वे सीधे या तुरन्त इस मुद्दे पर न आएँ लेकिन कुछ शुरुआती पीडीसी के बाद वे खुल सकते हैं।

   पीडीसी की सफलता को संख्या, लक्ष्य या परिणाम नहीं मापते, बल्कि अपनी भावनाओं और अनुभवों को साझा करने की धीमी और क्रमिक प्रक्रिया इसकी सफलता को मापती है, जो गहरे संवादों के लिए परिस्थिति बनाती है। इसके लिए सुगमकर्ता को धैर्यवान और दृढ़, दोनों होना होगा।

2. *नियमित अन्तराल पर बैठक करना*

   ऑन डायलॉग किताब में लेखक डेविड बॉम निश्चित अन्तराल पर संवादों की व्यवस्था करने की सलाह देते

हैं। वे लिखते हैं कि यदि ऐसा समूह निश्चित अन्तराल पर मिलता है, तो यह सुगमकर्ता पर निर्भरता को कम करता है और प्रतिभागी स्वयं से संवाद करना सीखते हैं। यह बाहरी समर्थन के बिना बातचीत की प्रक्रिया से ख़ुद को सशक्त बनाने की दिशा में एक क़दम है। यह हर शनिवार सुबह या दो सप्ताह में एक बार किया जा सकता है। नियमितता ही है जो उन्हें विचारोत्तेजक मुद्दों के बारे में बात करना शुरू करने में मदद करेगी।

3. *संवाद के विषय अलग-अलग होते हैं*

इनमें दोस्ती, ग़ुस्सा, सज़ा, अच्छाई, न्याय, धर्म, जाति, लिंग या शारीरिक छवि जैसे विषय शामिल हो सकते हैं। सुगमकर्ता को यह सुनिश्चित करने के लिए मज़बूत और अडिग होना चाहिए कि सामाजिक स्थान बच्चों को, विशेष रूप से उत्पीड़ित समुदायों के बच्चों को, इस बारे में प्रभावित (या डराए) नहीं कि वे कैसे और क्या बातें साझा करते हैं। सुगमकर्ता को भी उस मण्डली में प्रभुत्वशाली हस्ती बनने से सावधान रहने की ज़रूरत है और उसे यह जानना चाहिए कि कब पीछे रहकर नेतृत्व करना है।

4. *विविधता के लिए बड़े समूह*

लगभग 20 सदस्यों का एक बड़ा समूह बनाने से विविधता आती है, अर्थात समूह में विविध विचारों का आदान-प्रदान होता है। एक सुगमकर्ता 40 विद्यार्थियों की एक कक्षा में 20 विद्यार्थियों के दो समूह रखने का निर्णय ले सकता है। यह संसाधनों और कक्षा के सन्दर्भ पर भी निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, हो सकता है कक्षा में एक घेरा बनाने के लिए पर्याप्त जगह न हो या स्कूल में शिक्षकों की कमी हो, जिसके कारण कक्षा को विभाजित करके दो पीडीसी नहीं बनाए जा सकते। ऐसी स्थितियों में, विद्यार्थियों के एक समूह को सुबह-सुबह बुलाने या उन्हें स्कूल के बाद एक घण्टे रोकने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना होगा।

5. *सक्रिय रूप से सुनना एक पूर्व शर्त है*

'सक्रिय रूप से सुनने' का कौशल, जो संचार का एक तरीक़ा है, पीडीसी के लिए एक आवश्यक पूर्व शर्त है। पीडीसी काम नहीं करेगा अगर उसमें सिर्फ़ बात करने के अवसर हैं, लेकिन कोई सुनता नहीं। चिन्ताओं को साझा करना अर्थ-निर्माण की एक प्रक्रिया है, जो दूसरे व्यक्ति की बातों को सुने बिना असफल है। सक्रिय रूप से सुनने का अर्थ है बोलने वाले व्यक्ति के प्रति सम्मान दिखाना ताकि वे जान सकें कि वे जो कह रहे हैं सुनने वाला उसके साथ जुड़ा हुआ है। प्राथमिक कक्षा में बच्चों के लिए, सक्रिय रूप से सुनने के कौशल को दूसरे व्यक्ति की बातों पर ध्यान देने और उसके प्रति सम्मान दिखाने के रूप में समझा जा सकता है।

6. *सुगमकर्ता के रूप में शिक्षक*

एक शिक्षक विद्यार्थियों को अच्छी तरह जानती है, उनसे नियमित रूप से मिलती है। यह उम्मीद की जाती है कि वह समुदाय को भी अच्छी तरह से जानती है। वह कक्षा को एक सुरक्षित स्थान बनाने के लिए ज़िम्मेदार है। वह विद्यार्थियों के लिए एक प्रभुत्वशाली हस्ती भी है। एक साहसपूर्ण स्थान बनाने में सुगमकर्ता के रूप में उसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है। सुगमकर्ता की भूमिका निभाने के दौरान, वह अपनी प्रभुत्वशाली हस्ती होने के प्रति अतिरिक्त सतर्क हो जाती है। एक सुगमकर्ता के रूप में, उसे समूह को नियंत्रित करने या उनसे एक निश्चित तरीक़े से व्यवहार करने और बात करने की अपेक्षा नहीं करनी है। उसे काम सौंपने या अपेक्षाएँ रखने की ज़रूरत नहीं है। उसे विविध दृष्टिकोणों के लिए खुला रहना होगा, चर्चा के मुक्त प्रवाह में एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करना होगा और हस्तक्षेप या सही करने की इच्छा से बचना होगा।

उदाहरण के लिए, एक अनुवर्ती आत्म-चिन्तन सत्र में, उसकी भूमिका विद्यार्थियों को इस पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करने की होगी : 'एक चिन्ता साझा करते समय मुझे कैसा लगा? किसी की बात सुनकर मुझे कैसा लगा? मैं क्या सोच रहा था?' इससे विद्यार्थियों को सत्र से अपने अनुभव को मज़बूत करने में मदद मिलेगी। यह सुनिश्चित करना भी सुगमकर्ता का काम है कि चर्चा के लिए तत्परता रही और कोई आलोचनात्मक बयान नहीं दिया गया।

7. *प्रोत्साहन महत्त्वपूर्ण है*

अपनी किताब, *चिल्ड्रेन ऐज़ फिलॉसॉफर्स : लर्निंग थ्रू इंक्वायरी एंड डायलॉग* में लेखिका जोआना हेन्स ने एक क़िस्सा साझा किया है जो यहाँ हमारी मदद कर सकता है। वे लिखती हैं, 'एक समीक्षा में, एक शिशु कक्षा में एक सत्र के काम के बाद, एक सात वर्षीय बच्ची ने कहा, "मैंने दर्शनशास्त्र का बहुत आनन्द लिया है, लेकिन मैं जानना चाहती हूँ कि कैथरीन क्या सोचती है।" कैथरीन ने समूह में बमुश्किल बात की थी और अन्य लोगों ने भी ऐसी ही इच्छा व्यक्त की। अपने साथियों की इन टिप्पणियों ने कैथरीन को संकेत दिया कि उसके दोस्त उसे सुनना चाहते थे और उसमें उनकी रुचि ने उसे अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए कुछ प्रोत्साहन दिया। कई बार, विद्यार्थी बोलते नहीं हैं और उनके इस संकोच को अपनी बात

साझा न करने की इच्छा के रूप में देखने की ग़लती हो सकती है। ऐसी स्थितियों में, सुगमकर्ताओं और साथियों का प्रोत्साहन मदद करता है।'

हो सकता है कोई विद्यार्थी किसी आत्मसम्मान के मुद्दे के कारण अपनी बात साझा नहीं कर रहा हो; या क्योंकि वह डरा हुआ हो; या क्योंकि उसे लगता हो कि उसके विचार साझा करने लायक नहीं हैं। सुगमकर्ता के लिए ज़रूरी है कि वह बच्चों और उनके साथियों के बीच प्रोत्साहन और अपनी भावनाएँ साझा करने का वातावरण बनाए।

8. *न आम सहमति न संकल्प*

संवाद की प्रक्रिया को टकराव-समाधान निर्माण के अभ्यास के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। ऐसा भी नहीं है कि सभी विद्यार्थी एक समान बात पर आ जाएँगे और एक-दूसरे से सहमत होंगे। पीडीसी एक प्रक्रिया के रूप में विकसित होते हैं। यह सम्भव है कि आम सहमति-निर्माण, टकराव-समाधान और समस्या-समाधान जैसी सब बातें प्रक्रिया के हिस्से के रूप में हो भी सकती हैं और नहीं भी, लेकिन पीडीसी का यह उद्देश्य नहीं होता।

तीसरे पक्ष की सामग्री के माध्यम से बच्चों का सम्बलन करना

शुरुआती कुछ पीडीसी में, विद्यार्थियों या सुगमकर्ताओं के लिए खुलकर बात करना और बातचीत शुरू करना आसान नहीं होगा। सुगमकर्ता बातचीत का शुरुआती बिन्दु प्रदान करने के लिए तीसरे पक्ष की सामग्री की मदद ले सकता है। उदाहरण के लिए, सुगमकर्ता कोई कहानी या अख़बार की रिपोर्ट पढ़ सकता है। वे कलाकृतियों, फ़िल्मों, वृत्तचित्रों और तस्वीरों को भी दिखा सकते हैं; संगीत बजा सकते हैं या उन मुद्दों पर अपना अनुभव साझा कर सकते हैं जो विद्यार्थियों के जीवन से निकटता से सम्बन्धित हैं। ये सामग्री बच्चों को असहज कर सकने वाले बहुत सारे व्यक्तिगत विवरणों या पहचानों को प्रगट किए बग़ैर अपनी कल्पना और अनुभवों का उपयोग करने के लिए आधार और मदद प्रदान करेगी।

पीडीसी के लिए सुझाव

प्राथमिक कक्षा में विद्यार्थियों की उम्र भी उस सामग्री को तय करती है जिसका उपयोग सुगमकर्ता करता है। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

प्राथमिक कक्षा - आयु समूह 6-9 वर्ष

प्रोफ़ेसर हाइड लेगांगर-क्रोगस्टाड कहानियों के उपयोग का सुझाव देती हैं; इस उम्र के बच्चों से पूछा जा सकता है कि वे कहानी की अपनी समझ की और जाँच-पड़ताल करें और उनसे ऐसे सवाल पूछे जा सकते हैं :

- आप इस कहानी में कौन बनना चाहते हैं?

- आपको क्यों लगता है कि कहानी में x और y व्यक्तियों ने जो किया, क्यों किया?

चित्र-2 : एक पीडीसी का बुनियादी निरूपण।

- आपको क्या लगता है कि ऐसा करने से पहले और बाद में उन्होंने क्या सोचा होगा?

- क्या होता अगर (...)?

- यदि आप व्यक्ति x होते तो क्या करते?

उदाहरण के लिए, किताब *भीमराव अम्बेडकर : द बॉय हू आस्क्ड व्हाई* एक लड़के के बारे में है जो जातिगत भेदभाव के अपने दैनिक अनुभवों के बारे में सवाल उठा रहा है। आरम्भिक पीडीसी के लिए, सुगमकर्ता ऐसी कहानियों और उनके चित्रों का उपयोग बच्चों को चर्चा में शामिल करने हेतु ज़ोर से पढ़ने के लिए कर सकता है और इसके बाद ऊपर दिए गए प्रश्न पूछ सकता है। इससे बच्चों के लिए अपनी व्यक्तिगत कहानियों पर चर्चा किए बिना किसी मुद्दे पर चर्चा करने की जगह बन जाएगी।

प्राथमिक कक्षा - आयु समूह 10-13 वर्ष

प्रोफ़ेसर हाइड लेगांगर-क्रोगस्टाड सुझाव देती हैं कि इस उम्र में, बच्चे तथ्यात्मक ज्ञान में रुचि रखते हैं और उनके पास मौजूद जानकारी को व्यवस्थाओं और संरचनाओं में व्यवस्थित करने की आवश्यकता देखते हैं। कला और प्रतीकों को पढ़ना विद्यार्थियों को व्यवस्थापन की इस आवश्यकता को व्यक्त करने में मदद करने के लिए मध्यस्थ उपकरणों के रूप में कार्य कर सकता है। वे व्याख्या को समझना सीखते हैं, जानते हैं कि सभी उत्तर समान रूप से मान्य हैं और अपने सहपाठियों को सुनना सीखते हैं। वे अवलोकन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं — सामग्री, रंग, आकृति, आकार, केन्द्र, परिधि, केन्द्र बिन्दु और तकनीक; किसी भी अवलोकन को उपेक्षित या अस्वीकार नहीं किया जाता। उदाहरण के लिए, शिक्षक उन्हें शान्ति के लिए विभिन्न प्रतीकों — ☮, 🕊, ✌, 🌈का अर्थ लगाने के लिए कह सकते हैं। वे साथ इकट्ठा होते हैं, निरीक्षण करते हैं, अर्थ लगाते हैं, हो सकता है कुछ बच्चे रंगों को पहचान लें, कुछ आकृतियों को पहचान सकते हैं, कुछ किसी कहानी की तलाश कर सकते हैं, जबकि कुछ किसी ऐसी चीज़ से सम्बन्ध जोड़ सकते हैं जिसे वे पहले से जानते हैं। यह अभ्यास आरम्भिक पीडीसी के दौरान विद्यार्थियों को यह बताने में मदद करता है कि वे अपनी प्रतिक्रियाओं के सही या ग़लत होने के डर के बिना अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं। कोई निर्णय नहीं दिए जाएँगे क्योंकि कोई सही उत्तर नहीं है।

अनुभवों को स्वीकार करना

बच्चों के लिए एक समग्र वातावरण बनाने के लिए कक्षाओं को सुरक्षित और साहसपूर्ण स्थानों की आवश्यकता होती है। पीडीसी ऐसे स्थान बनाने के कई तरीक़ों में से एक हैं। शिक्षक उस सन्दर्भ के आधार पर नए तरीक़ों की खोज कर सकते हैं जिसमें उनकी कक्षाएँ स्थित हैं। विचार यह है कि ऐसे तरीक़ों की तलाश की जाए जो बच्चों की मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक ख़ुशहाली में योगदान दें। विचार यह है कि उनके लिए ऐसा स्थान बनाया जाए जहाँ वे हाशियाग्रस्त होने के एहसास को व्यक्त कर सकें और दूसरों को व ख़ुद को सुन सकें; यह उनके अनुभवों को स्वीकार करना और उन्हें यह बताना है कि उनके पास बोलने और लोगों को अपनी बात सुनाने के लिए एक सार्वजनिक आवाज़ है। यह उनके व्यक्तिगत अनुभवों और ज्ञान के प्रति विश्वास को भी दिखाता है: ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे बिना किसी डर के बड़े हों और उनके पास अपनी ख़ुद की आवाज़ हो जिसे दृढ़ता के साथ उठाने में वे डरें नहीं।

References

Arao, B., & Clemens, K. (2013). From Safe spaces to Brave Spaces. The Art of Effective Facilitation: Reflections from Social Justice Educators, 135, 150

Bohm, D., Factor, D., & Garrett, P. (1991). Dialogue: A Proposal

Bohm, D., Senge, P. M., & Nichol, L. (2004). On Dialogue. Routledge

Haynes, J. (2008). Children as Philosophers: Learning Through Enquiry and Dialogue in the Primary Classroom. Routledge

Leganger-Krogstad, H. (2014). From Dialogue to Trialogue: A Sociocultural Learning Perspective on Classroom Interaction. Journal for the Study of Religion, 27(1), 104-128

Rajendran, S., & Gade, S. (2018). Bhimrao Ambedkar: The Boy Who Asked Why. Kitaabworld, LLC

नूपुर रस्तोगी अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में रिसर्च एसोसिएट हैं। वे संवाद, बन्धुत्व और न्याय के लिए बने हित समूह का हिस्सा हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से शिक्षा में एमए करने से पहले स्कूलों में पढ़ाया है। उनके शोध की रुचि का क्षेत्र है सामाजिक न्याय और सत्ता से संवाद के लिए शिक्षणशास्त्र को समझना और रचना। उनसे *nupur.rastogi@apu.edu.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : निशांत राणा **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय